॥ ओ३म्॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

अनमोल वचन

यजमानाय द्रविणं दधातु।

(अथर्व० 7.14.4)

अग्नि यजमान को ऐश्वर्य प्रदान करे।

वर्ष 33, अंक 31 एक प्रति : 3 रुपये

सोमवार 12 जुलाई, 2010 से 18 जुलाई, 2010 तक

विक्रमी सम्वत् 2067 दयानन्दाब्द : 187

सृष्टि सम्वत् 1960853111 वार्षिक : 150 रुपये

फैक्स : 23343737 ई–मेल : aryasabha@yahoo.com

Website : www.delhisabha.com पृष्ठ सं. 1 से 8 तक

आर्यसमाज में होने वाले अंतर्जातीय विवाहों एवं सगोत्र विवाह पर गोष्ठी सम्पन्न

आर्यसमाजों में नहीं होंगे सगोत्रीय विवाह

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली द्वारा बुलायी गयी एक विशेष बैठक आर्यसमाज 15, हनुमान रोड के विशाल सभागार में 11.07.2010 को सायंकाल सम्पन्न हुई। समवेत स्वर से गायत्री मंत्र के उच्चारण के साथ प्रारम्भ होले वाली इस सभा की प्रस्तावना दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने रखी। प्रस्तावना में उन्होंने बताया कि आज का हमारा विषय आर्यसमाज में होने वाले अंतर्जातीय विवाहों अथवा आर्यसमाज के नाम पर होने वाले विधि–विरुद्ध एवं सगोत्र विवाह जैसी विकट समस्याओं का समाधान खोजना है। ऐसे विवाह से आर्यसमाज के उज्ज्वल यश के धूमिल होने के साथ समाज को अन्य हानियां भी उठानी पड़ रही हैं। प्रस्तावना के बाद विनय जी ने बैठक में उपस्थित महानुभावों से इस संबंध में विभिन्न प्रकार की समस्याओं को प्रस्तुत करने के लिए कहा तो आर्यसमाज नजफगढ़ के श्री जगदीश जी मलिक ने बताया कि कुछ लोग आर्य समाज नजफगढ़ के नाम से नकली संस्था बनाकर विवाह कराते हैं। समस्याएं विभिन्न प्रकार की मिलीं–कहीं कुछ वकीलों ने ही रजिस्टरों में आर्यसमाजें बना रखी हैं, फोटो खींचे और हाथों हाथ प्रमाण पत्र दे दिए। कहीं कुछ तथाकथित पण्डितों ने वकीलों से मिलकर ऐसे गैंग बनाकर धन्धा चला रखा है। समाजों में आने वाले विवाह के इच्छुक जोड़ों को ये लोग ऐसे धन्धेबाजों के पास भेज देते हैं और वहां से उन्हें कमीशन की रकम मिल जाती है। कुछ आर्यजनों की ओर से ऐसी सूचनाएं भी मिलीं कि कई लोग विवाह करवा कर उन्हें निरस्त करने के लिए भी मोटी रकम ऐंठते हैं। इन सबके साथ चर्चा यह भी उठी कि क्या अधिकृत

✶शपथ–पत्र देना होगा आवेदनकर्ताओं को।
✶विवाह कराने हेतु बनी नकली समाजों की सूचना सभा को तुरंत दें।
✶इस संबंध में सब समाजें सभा से शीघ्र पंजीकरण कराएं।

शेष पृष्ठ 4 पर

सगोत्र विवाह : समाधान की दिशा में

गतांक से संबंधित सगोत्र विवाह समस्या और समाधान का शेष

सर्वप्रथम तो यह जान लें कि सगोत्र विवाह कोई समस्या नहीं है। समस्या है, हम भारतीयों के हृदय में भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रति श्रद्धा का अभाव। समस्या यह है हम ऋषि–सन्तानों के मन–मस्तिष्क में ऋषि–मुनियों द्वारा स्थापित उच्च आदर्शों, जीवनमूल्यों एवं पारिवारिक व सामाजिक मर्यादाओं के प्रति निष्ठा की कमी होना। समस्या है ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था, तप, त्याग, परोपकार, संयम, सदाचार, धर्म के सच्चे स्वरूप को न जानना और जानने की जिज्ञासा का भी न होना। समस्या है मानव का अपने अन्दर बैठे, काम, क्रोध, लोभ और अहंकार जैसे दोषों, दुर्गुणों व दुर्व्यसनों से हार मान लेना। ऐसी ढेर सारी छोटी–बड़ी समस्याओं ने मिलकर मानव के मन को जो नाच नचाया, उसी के अनेक दुष्परिणामों में से एक दुष्परिणाम है सगोत्र विवाह। सगोत्र विवाह कोई बहुत भयानक अथवा महा अनर्थकारी कार्य नहीं, हाँ इसी रास्ते पर इसी गति से चलते रहे तो वह दिन दूर नहीं, जब एक कुल और रक्त सम्बन्ध रखने वाले लड़के–लड़की भी पति–पत्नी के रूप में रहने का संवैधानिक अधिकार

शेष पृष्ठ 4 पर

सभा के चलते मुकदमें : एक मजबूरी – एक आवश्यकता

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा आर्यसमाज को स्थापित हुए 134 वर्ष हो गए हैं। इतने काल में आर्यसमाज की सम्पत्तियां भी बढ़ीं, सम्पत्तियों के मूल्य भी बढ़े, समय के साथ–साथ आर्यसमाज के नियम–उपनियमों में जिन परिवर्तनों की आवश्यकता थी, अन्य कार्यों के चलते हम उन्हें प्राथमिकता नहीं दे पाए। इन न्यूनताओं का लाभ उठाते हुए अनेक लोगों ने आर्यसमाज की संस्थाओं एवं सम्पत्तियों पर अवैध कब्जे करने आरम्भ कर दिए। चूंकि आर्यसमाज का त्रिस्तरीय संगठन बहुत मजबूत था और उसके कुछ बिन्दु ऐसे थे

यदा–कदा लोग आर्यसमाज में चल रहे मुकदमों के सम्बन्ध में बहुत हल्के प्रकार की चर्चा कर देते हैं। जैसे – "सभाओं का काम तो झगड़े करना है।" "आर्यसमाज की सारी शक्ति मुकदमों में लग रही है।" "आर्यसमाज के अधिकारियों को मुकदमें लड़ने के सिवाय कोई काम नहीं है।" आदि– आदि .....। किन्तु इन मुकदमों की आवश्यकता और यथार्थ केवल आवश्यकता पड़ने पर या जिन आर्यसमाजों ने इन मुकदमों का सामना किया है, वे ही जानती हैं कि इनकी आवश्यकता क्यों पड़ती है? यह बताना दो–चार शब्दों में सम्भव नहीं है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत वार्षिक विवरण में सभा महामन्त्री की ओर से नोट दिया था। यह हर स्थान के लिए ज्यों का त्यों लागू होता है। सामान्य आर्यजनता की जानकारी के लिए इसे **आर्यसन्देश** में प्रकाशित किया जा रहा है। कितनी बड़ी शक्ति इन मुकदमों में सभा के अधिकारियों की लगती है, वह तो बताना इतना कठिन है, क्योंकि इसकी कोई सीमा नहीं है। सम्पत्तियों का बचाव एवं सत्य की सुरक्षा के आगे लगने वाली शक्ति कम दीखने लगती है। दुःख वहां होता है जब गलत और सही पक्ष को लोग एक ही तराजू में तोलने लग जाते हैं।

शेष पृष्ठ 4 पर

आर्यसमाज की धुनें अब सभी फोनों पर उपलब्ध

शेष पृष्ठ 6 पर

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य परिवारों के विवाह योग्य

युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन

दिनांक :– 25 जुलाई 2010 (रविवार)
स्थान :– आर्यसमाज, पंजाबी बाग (पश्चिम) दिल्ली–26
समय :– प्रातः 10 बजे

इस अवसर पर आप सभी महानुभाव सपरिवार पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें। सभी के लिए प्रीतिभोज की भी व्यवस्था की गई है।

आशीर्वाद : महाशय धर्मपाल जी (प्रधान केन्द्रीय आर्य सभा)

–: निवेदक :–

ब्र० राजसिंह आर्य, प्रधान — विनय आर्य, महामंत्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

राजीव आर्य, प्रधान — जितेन्द्र बनाती, मंत्री — आर्यसमाज पंजाबी बाग, पश्चिम

–: संयोजक :–

गोविन्द लाल (मो. 9811623552)

कंवरभान खेत्रपाल (मो. 9990083831)

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली

Website :- www.delhisabha.com; E-mail :- aryasabha@yahoo.com

अन्दर के पृष्ठों में : बोध कथा.... 2, वेदों में... – 3, शेष सभा के चलते.....4, आर्यसमाज के इतिहास... 5, समाचार–सूचनाएं – 6, 7 एवं 8

कविता

कहां है वह सर्वोत्तम योनि!

—प्रकाश आर्य, महू (म.प्र.)

सामने मेरे अनेक प्रश्न खड़े हैं,
मन मौन है, संशय, बड़े–बड़े हैं।
जब मानव की सर्वोच्च योनि पर मैंने विचार किया,
सोचा, संसार में इसे क्यों इतना मान दिया।
बहुत सोचने के बाद भी यह समझ नहीं पाया,
जब आज के मानव का चरित्र सामने आया।
क्योंकि लगभग सारी बातें इनमें वे पायी जाती हैं,
जिनसे प्रसिद्ध उल्लू–लोमड़ी–मगरमच्छ और कौए की प्रजाति है।
तो क्या इसकी महानता का कारण शरीर को माना है,
नहीं, नहीं, हाथी–घोड़ा–ऊँट इससे हैं बड़े, हमने जाना है।
फिर ध्यान गया इसकी मीठी वाणी पर,
पर इससे मीठी कुहकती दिखी कोयल डाली पर।
फिर प्रश्न उठा विज्ञान का जमाना है,
जल में, हवा में, करता सफर, इसलिए शायद बड़ा माना है।
किन्तु लाखों पक्षी और जलचर, बिना सहारे ये सब करते हैं,
आकाश और जल के ऊपर ही, वे निर्भर रहते हैं।
फिर महानता की एक और बात समझ में आयी,
परमात्मा से मानव ने विशेष अक्ल है पायी।
उलझते प्रश्न पर मन में प्रसन्नता की तरंगें उठीं,
पर दूसरे ही क्षण एकाएक वे मिटीं।
मन ने कहा इसे बुद्धि मिली तो क्या पर इससे तो जमाना त्रस्त है,
यह तो समाज की व्यवस्था बिगाड़ने में ही व्यस्त है।
हिंसा–शोषण–अत्याचार,
बन चुके इसके हथियार।
मूक पशु निर्जीव सृष्टि और मानवता इसके हैं निशाने पर,
तुला हुआ है पूरी तरह सुख–शान्ति मिटाने पर।
आसुरी और हिंसक प्राणी का बन चुका है, ये प्रतीक,
आतंकवाद–नक्सलवाद भी इसी के तो हैं, नजदीक।
समझ नहीं पाया मैं फिर भी इसे क्यों महान बताया जा रहा है,
अतीत के कारण शायद आदमी विश्वास में धोखा रहा है।
अब जरा वर्तमान पर सोचें,
फिर आदमी को देखें।
पुरानी मान्यता मिट जायेगी,
फिर सर्वोत्तम श्रेणी में इसकी गिनती न आ पायेगी।
अब इसकी महानता का ख्याल एक भुलावा है,
अमानुष को मानुष कहना तो एक छलावा है।
यहां विचारों के महल बिना नींव के ही खड़े हैं,
मेरे सामने अनेक प्रश्न खड़े हैं,
मन मौन है संशय बड़े–बड़े हैं।

Cont. from last issue **The Sixteen Rituals of Aaryas**

Vaanaprasth Sanskaar

(The ritual of leaving household for a life of austerity)

Vaanaprasth sanskaar implies that a man after getting married bearing children, marrying them in the right manner and having grandchildren- should go in a forest and lead a life of austerity and indulge in study of scriptures and of the self. The householders should take refuge in a forest as soon as they find their skin sagging, hair turning grey and after they have been bestowed with grand- children.

The time to enter Vaanprasth Aashram is after 50 years of age. After grandchildren are born, the man should educate his wife, sons, brothers, daughters-in-law etc regarding the household duties and get set for his journey into the forest. If the wife is willing, she can accompany the person, otherwise he should assign to the eldest son the duty of serving his mother with care. The departing man should instruct his wife to always educate children to follow the morally right path and to discard all wrongs.

Today, we are so trapped in our household lives that it pains to come out of it. Most of the people end their lives immersed in the household.

- Gyaaneshwaraarya, Darshanacacharya
To be continued...

देववाणी : संस्कृत

स्वामिदयानन्दस्य राजनैतिकं चिन्तनम्

गतांक से आगे :–

अतो राजास्वामित्वस्य अभिमानं न कुर्वन् प्रजानां संरक्षणं संवर्धनं हितचिन्तनं च कुर्यात्।

राज्ञः चरित्रम् :– "यथा राजा तथा प्रजा इति सिद्धान्तं मनसि धृत्वा महर्षि षष्ठसमुल्लसे राजा राजपुरुषश्च सर्वथा दुष्टाचरणं त्यजेत्। राष्ट्रस्य चरित्रं राज्ञः चरित्रस्योपरि दुष्टाचरणं त्यजेत्। राष्ट्रस्य चरित्रं राज्ञः चरित्रस्योपरि आधारभूतं वर्त्तते। अतः राजा राजपुरुषश्च धार्मिकौ न्यायवादिनौ सन्तौ सर्वसुधारस्य दृष्टान्तौ भवेताम्। राजपुरुषाः तक्षकवत् व्यसनानां छेदनं कुर्युः। मृगयादिदशकामजानि, पैशुन्यादीनि अष्टक्रोधजानि, दुर्व्यसनानि स्वयं त्यजेयुः अन्येषां च निवारयेयुः।

महर्षेः ध्रुवः विश्वासः आसीत् एकमनुष्य–सुधोरण एकमनुष्यस्यैव सुधारो भवति परं राजसुधारात् समस्त राष्ट्रवादिनां सुधारो भवति। एतद्विश्वासावलम्बनादेव महर्षिणा निर्भीकतया राज्ञां दुर्व्यसनानां कुकृत्यानां च खण्डनमण्डनं प्रारब्धम् एतत् खण्डनमेव मृत्योः कारणं बभूव। महर्षिणा एकस्मिन् पत्रे महाराजयशवन्तसिंहस्य वेश्याप्रेम प्रसङ्गस्य कटुभर्त्सनां कुर्वन् स्पष्टं लिखितम्–

"एक वेश्या से जो कि नन्ही भगतन कहाती है। उससे प्रेम! उसका अधिक संग. .... आप जैसे महाराजाओं को सर्वथा अयोग्य है।"

''सिंहों के आसन पर कुतियों का राज्य! इन कुतियों से कुत्ते ही उत्पन्न होंगे।" इत्यादिलेखैः सम्यक् ज्ञायते यत् महर्षेः हृदयेसच्चरित्रस्य कृते कियती पीडा कियत्तपनमासीत्। सर्वसंसारे निद्रामग्नेऽपि एक एव जागरितः आर्द्रहृदयः आक्रन्दति स्म।

दण्डव्यवस्था : –स्वामिदयानन्दस्य चिन्तने दण्डस्य अतीव महत्त्वम् उपादेयता च वर्त्तते। दण्डाभावे राज्ये अशान्तिः असुरक्षा च भवितुं शक्नोति। दण्डस्य महत्त्वं निर्दिशता महर्षिणा एवमुक्तम्–दण्डः राज्यस्यैव नास्त्याधारः अपितु धर्मस्यापि मूलाधारः वर्त्तते। सत्यार्थप्रकाशे, मनुस्मृतेः दण्डव्यव्यवस्थाम् अधिकृत्य प्रमाणबहुलान् श्लोकान् विवेचितवान्। तथा हि–

"स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः।
चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः।।
"दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्त्ति दण्डं धर्म विदुर्बुधाः।।

(मनु० 7–17–18)। अर्थात् यो दण्डः स एव यथार्थ राजा। स एव न्यायस्य प्रचारकः, सर्वेषां शासकः चतुर्वर्णाश्रमिणां धर्मस्य प्रतिभूः वर्त्तते।

– आचार्या सविता देवी
गुरुकुल पाणिनि प्रभात, हैदराबाद
क्रमशः

बोध कथा

गजेंद्र मोक्ष

– पं. बिहारी लाल शास्त्री

किसी वन में एक गजपति रहता था। एक दिन प्यास से व्याकुल हो, वह नदी तट पर जलपान करने गया। जल पीते–पीते हथनियों से किलोल करने लगा और मस्त हो गया। इतने में ही अचानक नाके (घड़ियाल) ने पांव पकड़ लिया। अब तो गज को होश आया। इधर गज अपना बल लगाकर स्थल की ओर खींचता है, उधर ग्राह का घर था, आखिर गजेन्द्र को हार खानी पड़ी। नाके ने घसीटना आरम्भ कर दिया, गजराज थक गया। ग्राह खींचे लिये जा रहा है। गजराज ने जल के ऊपर सूंड ऊपर उठा ली, परन्तु बांसों पानी में इसके कहीं प्राण बचते हैं। जौ भर सूंड ऊपर रह गई, अब कोई प्रयत्न काम नहीं करता। हथनियां और साथी हाथी चल दिये। अब हताश होकर हाथी ने हरि को टेरना आरम्भ किया। नदी में बहते हुए फूल को उठाकर भगवान की ओर ध्यान लगाया। दीनबन्धु दीनानाथ ने तत्काल कृपा करी और गज के प्राण बचा लिये।

यह **पौराणिक कथा** बहुत ही प्रसिद्ध है, परन्तु इसको सब यह समझते हैं कि सचमुच ऐसा ही हुआ था और निराकार भगवान् नंगे पांवों ग्राह को मारने आये थे। भला विचारो तो सही, सर्वव्यापी ईश्वर का आना–जाना कहां बनता है? सर्वशक्तिमान् क्या ग्राह को मारे हुए नहीं छुड़ा सकता, क्या ग्राह के मुख में ईश्वर व्यापक नहीं था। यदि था तो फिर क्यों कहते हो कि अन्यत्र से आया। वास्तव में यह अलंकार है। इसका तात्पर्य यह है कि जीवात्मारूप हाथी वासना से प्यासा होकर इस भवसागर में जल पीने आया है। यहां आकर विषय–भोगों में मस्त होकर भूल जाता है। इतने में मृत्यु रूपी ग्राह उसे आ दबाता है। यदि वह इस समय जगदीश का स्मरण करे और संसार में बहते हुए मन रूपी पुष्प को प्रभु की ओर पुकार करे, तो अवश्य उसका उद्धार होगा और वह मृत्यु के क्लेश रूपी ग्राह से बचकर आनन्दित हो जायेगा यथा– **'तमेव विदित्वातिमृत्यु–मेति नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।'** (यजुः०) ईश्वर को जानकर मृत्यु के दुःख से बच सकता है और कोई मार्ग छुटकारे का नहीं है। *(साभारः दृष्टान्त सागर)*

सैद्धांतिक लेख

वेदों में ईश्वर का स्वरूप : 2

गतांक से आगे

आर्यसमाज के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान्, दार्शनिक, लेखक एवं चिंतक **पं० श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय** द्वारा लिखित लेख के दूसरे भाग में ईश्वर के निराकार एवं अन्य गुणों को सप्रमाण प्रस्तुत किया गया है। आज जब कि विभिन्न मतावलंबी ईश्वर को लेकर अपने–अपने विचार प्रकट कर रहे हैं, ऐसे में यह लेख हम सबके लिए बहुत ही पठनीय एवं मननीय है। **–संपादक**

अतः व्यापकता के लिए भी एकत्व आवश्यक है। इसलिए वेद मन्त्र में 'ईश' शब्द एक वचन है। तात्पर्य यह है कि इस परिवर्तनशील जगत् की प्रत्येक गति में एक महती शक्ति व्यापक है। यह शक्ति एक है इसलिए "ईशा" तृतीयान्त एकवचन है।

परन्तु वेद में ईश्वर के एकत्व को बताने के लिए केवल यही शब्द नहीं है। हम निम्न मन्त्र देते हैं जिनमें बताया गया है कि ईश्वर एक ही है–

अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शाश्वतः।

मां हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे वि भजामि भोजनम्।। (ऋ०10.48.1)

अर्थ – मैं सब पदार्थों का सबसे पहला स्वामी हूँ। मैं सदा रहनेवाले धनों को प्राप्त कराता हूँ। मुझे प्राणी पिता के तुल्य मानते हैं। मैं उपासक को भोजन देता हूँ।

इस मन्त्र में "अहं" एकवचन है। ईश्वर कहता है कि मैं समस्त जीवों का पिता के तुल्य हूँ।

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदाचन।

सोममिन्मां सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथनः।। (ऋ०10.48.5)

अर्थ– मैं शक्तिशाली हूँ। मेरे धन को कोई जीत नहीं सकता। मुझे कभी मृत्यु नहीं आती। उपासक लोग मुझसे ही धन की याचना करते हैं। मुझसे प्रेम करने वाले कभी हानि को प्राप्त नहीं होते।

एक एवाग्निर्बहुधा समिद्ध एकः सूर्यो विश्वमनु प्रभुतः।

एकैवोषा सर्वमिदं वि भात्येकं वा इदं वि बभूव सर्वम्।। (ऋग्वेद 8.58.2)

इस वेद मन्त्र में ईश्वर एकत्व को तीन उदाहरणों से स्पष्ट किया गया है। पहला उदाहरण अग्नि का है। अग्नि यद्यपि एक है तो भी अनेक वस्तुओं में अनेक प्रकार से प्रकाशित होती है। दूसरा उदाहरण सूर्य का है। सूर्य एक है, परन्तु समस्त विश्व में चमकता है। इसी प्रकार उषा भी एक ही है। जैसे वह सब भौतिक पदार्थ एक होते हुए अनेक प्रकार प्रकाशित होते हैं, इसी प्रकार ब्रह्म एक है, परन्तु सृष्टि में भिन्न–भिन्न प्रकार के कार्य करता है।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (ऋग्वेद10.121.1)

सृष्टि के पूर्व एक प्रकाश का पुञ्ज था। वही सबका एक स्वामी था। वही पृथिवी और आकाश का धारक था। उसी ईश्वर की हम हृदय से भक्ति करें।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।

य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (ऋ०10.121.3)

जो चराचर जगत् का एक बड़ा स्वामी हुआ। जिसने दोपायों और चौपायों को बनाया, उसी परमेश्वर की हम विनयपूर्वक भक्ति करें।

आपो ह यद् वृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्।

ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम्।। (ऋ०10.121.7)

अर्थ– विस्तृत जलों ने जब विश्वरूपी गर्भ को धारण किया, जिसमें अग्नि उत्पन्न हुई उस समय सब देवों का प्राण रूप एक ईश्वर था। हम उसी ईश्वर की श्रद्धा से भक्ति करें।

यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्।

यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (ऋ०10.121.8)

अर्थ– जिसने जलों को अपनी बड़ी शक्ति से देखा और वह शक्ति धारण की जिससे यज्ञ उत्पन्न हुआ। जो देवों का अध्यक्ष एक देव था। उस ईश्वर की हम श्रद्धा से भक्ति करें।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परिता बभूव।

यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम।। (ऋ०10.121.10)

अर्थ– हे प्रजाओं के स्वामी! तुम्हारे सिवाय और कोई इन सब उत्पन्न हुए पदार्थों का परिज्ञान नहीं रखता। जो कुछ हमारी कामनाएँ हों, वह हमको प्राप्त होवें। हम धनों के स्वामी हों।

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान्।

एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।। (ऋ०1.164.46)

ब्रह्म एक है, परन्तु विद्वान् पुरुष उसके अनेक गुणों के कारण उसे भिन्न–भिन्न नामों से पुकारते हैं। अर्थात् इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण गुरुत्मान, यम, मातरिश्वा इत्यादि।

जो लोग समझते हैं कि वेदों में एक ईश्वर की पूजा नहीं, किन्तु अग्नि, मित्र आदि देवताओं की पूजा है उनको इस मन्त्र के शब्दों पर विचार करना चाहिए। यहाँ स्पष्ट कहा है कि ईश्वर एक है। केवल विप्रा बहुधा वदन्ति अर्थात् विद्वान् लोग उसको भिन्न–भिन्न नाम देते हैं। यहाँ ईश्वर के नामों की अनेकता है, ईश्वर की अनेकता नहीं। और नाम तो गुणों के कारण भिन्न–भिन्न होने ही चाहिए। यदि नामों की अनेकता से ईश्वर की अनेकता समझी जाये तो कोई धर्म भी ईश्वरैक्यवादी न रहेगा क्योंकि न केवल भिन्न–भिन्न भाषाओं में ही ईश्वर के अनेक नाम हैं, किन्तु एक भाषा में भी ईश्वर को अनेक नामों से पुकारा गया है। यह स्वाभाविक है क्योंकि मनुष्य के भाव ईश्वर के प्रति भिन्न–भिन्न अवस्थाओं में भिन्न–भिन्न होते हैं और वह उन्हीं भावों के अनुसार ईश्वर को पुकारते हैं। जैसे बीमार पुरुष ईश्वर को चिकित्सक के रूप में देखता है और दरिद्री धनदाता के रूप में।

केनेयं भूमिर्विहिता केन द्यौरुत्तरा हिता।
केनेदमूर्ध्वं तिर्यक् चान्तरिक्षं व्यचो हितम्।

ब्रह्मणा भूमिर्विहिता ब्रह्म द्यौरुत्तरा हिता।
ब्रह्मेदमूर्ध्वं तिर्यक् चान्तरिक्षं व्यचो हितम्।। (अथर्ववेद 10.2.24–25)

पहले मन्त्र में प्रश्न है और दूसरे में उसका उत्तर। यह भूमि किसने धारण की और यह द्यौ किसने। किसने ऊपर का तिरछा, व्यापक अन्तरिक्ष धारण किया। इन सबको ब्रह्म ने धारण किया है।

कीर्तिश्च यशश्चाम्भश्च नभश्च ब्राह्मणवर्चसं चान्नं चान्नाद्यं च य एतं देवमेकवृतं वेद।। (अथर्ववेद 13.4.14–15)। उस पुरुष को कीर्ति, यश, विस्तार, अन्न तथा अन्न खाने की शक्ति प्राप्त होती है, जो इस ईश्वर को एक और एक रस मानता है। **ए एष एक एकबृदेक एव।।** (अथर्ववेद 13.4.20)। वह एक ही है। एक रस ही है। इन ऐसे प्रबल मन्त्रों को पढ़कर भी जो कहता है कि वेद में एक ईश्वर का प्रतिपादन नहीं अथवा ईश्वर के एक होने का भाव नया है, वह न अपने साथ न्याय करता है, न संसार के साथ। सामर्थ्यवान् तथा व्यापक ईश्वर के लिए जो एक ओर अद्वितीय हैं और क्या गुण चाहिए? यजुर्वेद में इस प्रकार वर्णन किया गया है– **सपर्यगाच्छुक्रम– कायमव्रणम– स्नाविरꣳशुद्धमपाप–विद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथा– तथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः सामभ्यः।।** वह ईश्वर कैसा है – (1) **पर्यगात्–** व्यापक, (2) **शुक्रम्–** सबकी भलाई करनेवाला, (3) **अकायम् –** शरीर रहित, (4) **अव्रणम् –** पूर्ण अर्थात् त्रुटियों रहित, (5) **अस्नाविरं** –विभाग रहित अर्थात् अखण्ड, (6) **शुद्धं–** पवित्र, (7) **अपापविद्धं–** पाप से रहित, (8) **कविः–** ज्ञानवान्, (9) **मनीषी–** बुद्धिमान्, (10) **परिभूः–** सबका अध्यक्ष, (11) **स्वयंभूः** –स्वयंभूः– स्वयं अपनी शक्ति से प्रकाशित होनेवाला और अपनी सत्ता के लिए किसी दूसरी सत्ता रहनेवाली

शेष पृष्ठ 5 पर

ब्रह्म-सूत्र

द्वितीय अध्याय-तृतीय पाद (32)

नित्योपलब्ध्यनुपलब्धि प्रसंगोन्यतर नियमो वाऽन्यथा ।।32।।

अर्थ– (नित्य उपलब्धि अनुपलब्धि प्रसंगः) इससे नित्य ज्ञान की प्राप्ति अथवा नित्य ज्ञान की अप्राप्ति का प्रसंग उत्पन्न होगा (अन्यतर नियमः) दोनों में से एक का नियम (वा) अथवा (अन्यथा) नहीं तो।

भावार्थ – जीवात्मा के अणु परिमाण होने के समर्थन में सूत्रकार कहता है– यदि आत्मा को अणु न मानकर विभु माना जाए तो उसमें अनेक दोष हैं। आत्मा के विभु होने पर उसका मन और अन्य इंद्रियों से सदा ही संबंध बना रहेगा। इसका परिणाम होगा कि यदि इस संबंध से ज्ञान प्राप्ति होगी तो सदा होती रहेगा और यदि संबंध होने पर भी ज्ञान नहीं होगा तो कभी भी ज्ञान प्राप्ति न होनी चाहिए। परन्तु ये दोनों ही बातें हमारे सामान्य अनुभव के विरुद्ध है। अतएव विभु आत्मा का ऐसा अभाव नहीं माना जा सकता कि वह प्राप्ति और अप्राप्ति (उपलब्धता और अनुपलब्धता) दोनों का सहनियामक हो। यदि इन दोनों में से अन्यतर (किसी एक) का नियम स्वीकार किया जाए यानी कहा जाए कि आत्मा इन दोनों में से किसी एक की नियामक है। अतः उसके अनुसार या तो वह सदा ही प्राप्त होनी चाहिए या सदा अप्राप्त होनी चाहिए। परन्तु हम संसार में प्रत्यक्ष देखते हैं कि आत्मा कभी ज्ञान प्राप्त करता है और कभी ज्ञान प्राप्त नहीं करता है। यह व्यवस्था आत्मा को विभु मानने पर संभव नहीं है। यह तभी संभव है जब आत्मा को अणु माना जाए। अणु और परिच्छिन्न होने से जब आत्मा का मन और इंद्रियों से संपर्क होता है तभी ज्ञान की प्राप्ति होती है और जब संपर्क नहीं होता तब ज्ञान की प्राप्ति भी नहीं होती। यदि आत्मा को अणु मान कर भी ज्ञान प्राप्ति के लिए बुद्धि आदि करणों का सहयोग स्वीकार न करें तक भी ऊपर बताई नित्य प्राप्ति आदि दोष बने रहेंगे। साधन रहित आत्मा को या तो नित्य उपलब्धि होती रहे या बिलकुल भी उपलब्धि नहीं होनी चाहिए। ये सब लोकव्यवहार के विरुद्ध हैं। आत्मा के उपलब्धि के साधन बुद्धि आदि करण उसकी संसारी दशा में सदा संबद्ध रहते हैं। इस पूरे विवेचन से आत्मा अणु परिमाण सिद्ध होती है।

–आत्म को अणु परिमाण सिद्ध करने के पश्चात् अब सूत्रकार उसके कर्त्तृत्व का प्रतिपाद्य करते हैं।

– डॉ. भारत भूषण विद्यालंकार
सी–2ए/90 जनकपुरी, नई दिल्ली–58

सभा के चलते......प्रथम पृष्ठ का शेष

जिनके कारण अक्सर अवैध कब्जाधारी लोग अपनी कुटिल चालों में सफल नहीं हो पाए। फरवरी, 2005 में स्वामी अग्निवेश द्वारा सार्वदेशिक सभा पर अवैध रूप से गलत तत्वों के सहयोग से कब्जा करने के पश्चात् स्थितियां ऐसी हो गईं कि मूल संगठन में बिखराव बढ़ गया। फलस्वरूप उन स्वार्थी तत्वों को अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए ऐसा मार्ग मिल गया जिससे वे अपने उद्देश्यों में सफल हो सकते थे। स्वामी अग्निवेश को दिल्ली में अपने आपको स्थापित करने के लिए ऐसे ही तत्वों की आवश्यकता थी जो येन–केन–प्रकारेण स्वामी अग्निवेश का समर्थन करें। प्रासंगिकतावश यह कहना भी अनुपुयक्त नहीं होगा कि उन सभी तत्वों को भी स्वामी अग्निवेश जैसे किसी व्यक्ति की तलाश थी जो उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों का आंख मूंदकर समर्थन करे और उनके कार्यों में हस्तक्षेप न करे। स्वामी अग्निवेश द्वारा सार्वदेशिक सभा पर अवैध कब्जा करने पर सबसे प्रमुख एजेण्डा गुरुकुल कांगड़ी पर कब्जा करना था। इसके लिए उन्होंने पहले तो प्रेम से और फिर धमकियों से दिल्ली, हरियाणा और पंजाब की सभाओं को अपने साथ मिलाने की कोशिशें कीं। जब इसमें वे सफल नहीं हो पाए तो उन्होंने दिल्ली, हरियाणा और पंजाब की सभाओं को भंग करने की कार्यवाहियां कीं। यदि उनके द्वारा की गई कार्यवाहियां सफल हो जातीं, और उनके द्वारा बनाई गई तदर्थ समितियां कुछ समय तक ही अवैध रूप से ही सही कार्य करने लगतीं या उन्हें न्यायालय द्वारा रोक न दिया जाता तो आज आर्यसमाज के संगठन की न जाने क्या स्थिति होती।

आर्यसमाज के संगठन की गहराई से जानकारी रखने वाले महानुभाव मेरी इस बात से निश्चित रूप से सहमत होंगे। किसी भी आर्यसमाज में बिना सोचे–समझे, आगा–पीछा देखे, गलत और सही का अनुमान लगाए, तदर्थ समितियां बनाना, अवैध रूप से विद्यालयों की प्रबन्ध समिति बना–बनाकर भेजना, जो भी कोई उनके पास चला जाए, उसी को इमदाद के रूप में अधिकारी बनाते जाना – यह इनकी कार्य पद्धति का अंग बन गया था।

मैंने इस सम्बन्ध में काफी विचार किया कि आर्यसमाज की नीचे की स्थिति को समझे बिना आखिर ये इस प्रकार की कार्यवाहियां कैसे कर रहे हैं। तब मेरे निष्कर्ष में कुछ बातें आईं जो निम्न प्रकार थीं।

स्वामी अग्निवेश, स्वामी आर्यवेश, श्री कैलाशनाथ सिंह कभी भी किसी भी आर्यसमाज के साथ जुड़कर नहीं रहे और एक सामान्य सदस्य के रूप में कभी भी कार्य नहीं किया। साप्ताहिक सत्संगों में जाना, उपस्थित रजिस्टरों में अपनी हाजिरी लगाना, आर्यसमाज के निचले संगठन की बागडोर संभालना कभी इनके व्यवहार में नहीं रहा। इसलिए ये कभी भी निचले स्तर की जमीनी सचाई को नहीं समझ सके। आय का शतांश देना, सभासद घोषित होना, आदि बातों से कभी भी इनका सरोकार नहीं रहा।

★ ये मुकदमें एक मजबूरियां हैं एक अच्छा भविष्य बनाने के लिए।
★ ये मुकदमें एक मजबूरी है, गलत कार्यों को, गलत मंशाओं को होते रहने से रोकने के लिए।
★ ये मुकदमें मजबूरियां हैं, सच और झूठ का फैसला करने क लिए ताकि सच अपाहिज न हो जाए।
★ ये मुकदमें मजबूरियां हैं क्योंकि जब हल के अन्य सब रास्ते बन्द हो जाते हैं तब एकमात्र यही मार्ग शेष रहता है।
★ प्रथम द्रष्ट्या ये मुकदमें समाज के लिए घातक विष दिखते हैं परन्तु निर्णय आने के पश्चात् अमृत तुल्य दिखते हैं।

खैर, समय रहते स्वामी अग्निवेश की बनाई गई तदर्थ समितियों के खिलाफ हरियाणा तथा दिल्ली की कोर्टों में मुकदमें डाले गए और मजबूती से की गई कार्यवाही के कारण स्वामी अग्निवेश तथा उनके द्वारा बनाई गई तदर्थ समितियों पर स्टे लग गया तथा उनको दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों में दखलंदाजी करने से पूर्णतः रोक दिया गया। किन्तु मात्र 15–20 दिनों में ही उन्होंने दिल्ली की आर्यसमाजों में ऐसे विवाद खड़े कर दिए जिनको सभा आज तक भुगत रही है। स्वामी अग्निवेश से प्रेरणा लेकर एक और गुट श्री मिठाई लाल सिंह के नेतृत्व में पनप उठा जिसका गलत फायदा उठाकर दिल्ली के अति महत्त्वाकांक्षी व्यक्ति वैद्य इन्द्रदेव ने ही अपने आपको दिल्ली सभा का प्रधान कहना प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप पहले एक पक्ष को रोकने का कार्य था, पर अब दो–दो पक्षें का सामना करना पड़ रहा है।

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश–2, आर्यसमाज घोण्डा, आर्यसमाज सागरपुर, प्रताप नगर, आर्यपुरा, मिण्टो रोड, रतनदेवी आर्य स्कूल आदि–आदि। इनके दुष्प्रभावों को समाप्त करने के लिए सभा को एवं आर्यसमाजों को अनेक मुकदमें करने पड़े जिनमें से कुछ में तात्कालिक आर्डर आ चुके हैं जो कि पूर्ण रूप से सभा के पक्ष में गए हैं। बाकी सभी पर निरन्तर तिथियां पड़ती हैं और कार्यवाहियां जारी हैं। इसी प्रकार मुकदमों का जन्म होता है और ये उन मजबूरियों में करने पड़ते हैं जब संगठन को बचाने की दृष्टि से और कोई राह शेष नहीं बचती। स्वामी अग्निवेश जी द्वारा किया गया कब्जा भी असत्य पक्ष की नीति थी। जिसके खिलाफ आर्यसमाज में एक विरोध की लहर उठी और समस्त आर्यजनता ने सत्ता परिवर्तन के लिए इस प्रकार की पद्धति को पूरी तरह से नकार दिया।

इसी प्रकार महा असत्य का सहारा लेकर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में तथा उससे सम्बन्धित संस्थाओं के सम्बन्ध में जिस प्रकार से नियमों का चीर–हरण हुआ, झूठ बोला गया, सारी सीमाएं लांघकर, एक ही लक्ष्य को सामने केवल इसको रखा गया कि कि कैसे गुरुकुल कांगड़ी पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कब्जा बरकरार रखा जाए, इसे अग्निवेश द्वारा किए गए कब्जे से अलग हटकर कैसे देखा जा सकता है। फर्क था तो केवल एक कि वहां नाम था स्वामी अग्निवेश और यहां आड़ ली गई श्री मिठाई लाल सिंह की। फलतः मजबूरी में आकर कोर्ट में जाना पड़ा तथा वे मुकदमें आज तक चल रहे हैं और इससे भी अधिक जो हानि हुई, वे इस प्रकार हैः–

★ गुरुकुल कांगड़ी के चल रहे भूमि विक्रय विवाद के सुलझने में इन मुकदमों के कारण व्यर्थ की देर हो रही है।

★ गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी जो कि आर्यसमाज की एक शान थी, वह वर्तमान में बुरे दिन देख रही है।

★ गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में इतनी अनियमितताएं बढ़ चुकी हैं जिनका वर्णन अनेक बार यू.जी.सी. की वार्षिक रिपोर्ट में हो चुका है।

★ सम्पत्तियों का दुरुपयोग सीमा के आगे तक बढ़ा हुआ है और उनकी देख–भाल करने वाला कोई भी नहीं है।

कारण केवल एक है कि इस पूरे तन्त्र की तीन संचालक संस्थाओं में से दो हरियाणा सभा एवं दिल्ली सभा के वैध अधिकारियों का कोई ताल्लुक, निरीक्षण तथा निर्णयों में भागीदारी किसी प्रकार से नहीं रह गई है। जिसके कारण पंजाब सभा की निरंकुशता गुरुकुल कांगड़ी पर हावी हो गई है।

ये वर्तमान के दुःखद विषय हैं। यह सब मैं केवल इसलिए अंकित कर रहा हूं कि इतिहास इन बातों को सनद रखे तथा भविष्य में आने वाली पीढ़ी आर्यसमाज का संचालन करते समय इन गलतियों से – इन भूलों से सबक ले सके। इन बातों को अंकित करने का मेरा उद्देश्य यह भी है ताकि सभाओं की कार्यप्रणाली में कितनी मजबूरियां, कितने ऐसे मोड़ आते हैं कि जिनसे चाहकर भी व्यक्ति अपनी राह बदल नहीं सकता।

–विनय आर्य, महामंत्री
मो. 9958174441

आर्यसमाजों में....प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्यसमाजों में होने वाले विवाह भी विधिवत् होते हैं या नहीं, यह भी विचारणीय है। इन सबके सथ सगोत्र विवाह को भी एक भयंकर समस्या बताकर इसका भी समाधान खोजने पर बल दिया गया।

समस्याओं के बाद समाधान की दिशा में बढ़ते हुए चर्चा की गई तो विनय जी ने कहा सबसे बड़ी समस्या यह है कि हमारी वैधानिक समाजें भी सभा द्वारा चलाए गए पंजीयन अभियान को गम्भीरता से नहीं ले रहीं। उन्होंने कहा कि हमारे क्षेत्रीय पदाधिकारी अपने क्षेत्र में आने वाली आर्यसमाजों का पंजीकरण कराने के लिए प्रेरणा दें। सर्वसम्मति से इसकी अंतिम तिथि 15 अगस्त रखी। 15 अगस्त तक जिन समाजों के नाम सभा कार्यालय में आ जाएंगे, उन्हें सभा दिल्ली सरकार के रजिस्ट्रेशन कार्यालय को प्रेषित कर देगी। दिल्ली सरकार से रजिस्टर्ड न होने वाली कोई समाज जो विवाह का प्रमाण पत्र देगी, वह अवैध होगा। इस दुविधा से बचने के लिए दिल्ली की सभी समाजों को पंजीयन हेतु अपने नाम सभा कार्यालयों को भेज देने चाहिए।

अधिकृत समाजों में विवाह विधिवत् हों, विवाह का न्यनूतम व अधिकतम शुल्क निर्धारित हो, विवाह–फार्म का वर्तमान समय के अनुकूल प्रारूप क्या हो, समाजों के पुरोहित द्वारा विवाह करने–कराने के सम्बंध में होने वाली अनियमितताएँ जैसे मुद्दों पर चर्चा करने के लिए शीघ्र ही एक पूर्णदिवसीय बैठक बुलाने की आवश्यकता सभी ने अनुभव की। सभा शीघ्र ही **आर्य सन्देश** के माध्यम से इसकी सूचना प्रसारित करेगी। विनय जी ने सबको प्रेरित किया कि जिस किसी आर्य पुरुष को नकली विवाह कराने वाली आर्यसमाज की सूचना मिले, वह अपना कर्त्तव्य समझकर तुरन्त सभा को इसकी सूचना दें। सगोत्र विवाहों के सम्बंध में भी सबका विरोध सामने आया। आर्यसमाजों में महर्षि की मान्यताओं के विरुद्ध ऐसे सगोत्र विवाह बिलकुल नहीं होने चाहिए। आर्यसामाजिक, वैज्ञानिक एवं जीव विज्ञान आधारित दोषों के विभिन्न पम्पलेटों, निमन्त्रण पत्रों आदि के पीछे लिखवाकर बाँटें। प्रत्येक आर्यसमाज के कार्यालय व सत्संग भवन में इस आशय का सुन्दर संक्षिप्त बैनर लगाया जाना भी निश्चित हुआ।

इस बैठक की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के उपप्रधान श्री विद्यामित्र जी ठुकराल ने की। भीषण गर्मी के बावजूद इस बैठक में दिल्ली की आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने भारी संख्या में भाग लिया।

सगोत्र विवाह....प्रथम पृष्ठ का शेष

ढूँढ़ निकालेंगे। ऐसे सम्बन्धों के पक्ष में तर्क देने वाले और बोलने वाले तो आज भी मिल सकते हैं।

कभी–कभी मेरा हृदय कहता है – कितना अच्छा होता, यदि भारत देश आज भी प्रत्यक्ष से अंग्रेजों का ही गुलाम होता। अंग्रेज भी मोद मनाते होंगे कि जो काम हम भारत में रहकर लंबे संघर्ष करके, जान जोखिम में डालकर न कर सके, वह काम अपने घर बैठकर काले अंग्रेजों की सहायता से कितनी सुगमता से कर रहे हैं।

स्वाधीनता से पूर्व हमारे अन्दर अपनी सभ्यता, अपनी संस्कृति, अपने रीति–रिवाज, अपने खान–पान, अपनी मान–मर्यादा और अपनी मातृभूमि के लिए कितना

शेष पृष्ठ 5 पर

आर्यसमाज के इतिहास और पुरातत्व की रक्षा हो

– डॉ० भवानी लाल भारतीय

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने **आर्य सन्देश** के माध्यम से आर्यसमाज के इतिहास और पुरातात्विक सामग्री के संरक्षण का अभियान चलाकर एक महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्य की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया है। प्रायः भारतवासियों पर यह आरोप लगाया जाता है कि इनमें इतिहास लेखन तथा इतिहास संरक्षण के प्रति कम रुचि है। एक सीमा तक यह आरोप सत्य है। संस्कृत में हर्षचरित (बाण भट्ट) तथा राजतरंगिणी (कल्हण रचित) जैसे ग्रन्थ अधिक नहीं हैं; जो तत्कालीन समाज और इतिहास को लेकर लिखे गये थे। तुलना में मुसलमान कालीन इतिहास के लेखकों एवं ग्रन्थों की संख्या अधिक है। बाबर तथा जहांगीर ने अपनी आत्मकथाएं लिखी थीं। अकबर स्वयं पढ़ा–लिखा नहीं था, किन्तु उसके दरबारी लेखकों– अबुल फ़जल तथा फ़ैजी ने अकबर शासित प्रदेशों तथा शासन का 'अकबरनामा' ग्रन्थ में विवरण एकत्र किया। अंग्रेज इतिहासकारों में विन्सेंट स्मिथ का नाम लिया जाता है, तो भारतीय इतिहासकारों में रमेशचन्द्र मजूमदार, डॉ० ईश्वरी प्रसाद, डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव आदि के नाम प्रमुख हैं।

सभा–संस्थाओं के इतिहास लेखन का प्रमुख दायित्व तत्–तत् संस्था के अधिकारियों तथा अनुयायियों का होता है। ब्रह्मसमाज का इतिहास उसी संस्था ने पं० शिवनाथ शास्त्री से लिखवाया, तो कांग्रेस का बृहद् इतिहास डॉ. पट्टाभि रामैया ने अनेक खण्डों में लिखा। खेद है कि आर्यसमाज में इतिहास लेखन के प्रयास व्यक्ति के स्तर पर तो हुए, किन्तु संस्थाओं ने इसमें अधिक रुचि नहीं दिखाई। पं. नरदेव शास्त्री ने दो खण्डों में आर्यसमाज का इतिहास लिखा, तो वह अपने अनेक आपत्तिजनक प्रसंगों के कारण विवादों के घेरे में आ गया। स्वामी श्रद्धानन्द ही अकेले दूरदर्शी महापुरुष थे, जिन्हें आर्यसमाज के इतिहास को प्रामाणिक रूप से लिखवाने की चिन्ता थी। उन्होंने आर्यसमाज के 50 वर्षीय इतिहास की आधारभूत सामग्री का संचय कर अपने पुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति को सौंपा था कि वे इतिहास लेखन का यह कार्य पूरा करेंगे।

यद्यपि इन्द्र जी ने दो खण्डों में यह इतिहास लिखा तथा 1956–57 में वह सार्वदेशिक सभा से छपा, किन्तु आज यह अनुपलब्ध है और अब तो आर्यसमाज की स्थापना को 135 वर्ष पूरे हो गये हैं। अतः इस दीर्घकाल में हुई प्रगति–अवनति–भविष्य जैसे प्रश्नों की सटीक मीमांसा होनी उचित है। इस बीच डॉ० सत्यकेतु जी ने 1980–87 की अवधि में आर्यसमाज का सप्तखण्डात्मक इतिहास लिखवाया। मेरे अतिरिक्त पं. हरिदत्त वेदालंकार ने लेखन कार्य में उनका सहयोग किया। यह लगभग 6000 पृष्ठों का बृहद् इतिहास पुस्तकालयों की शोभा तो अवश्य बढ़ायेगा, किन्तु उसे अक्षरशः पढ़ने वाले पाठक तो नगण्य हैं। यहां यह लिखना भी आवश्यक है कि पंजाब, सिंध, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल आदि प्रान्तों की समाजों ने अपने–अपने प्रान्तों में आर्यसमाज की गतिविधियों को ग्रन्थाकार प्रकाशित कराया था। मेरे पास आर्यसमाज के इतिहास लेखन की आधारभूत सामग्री प्रचुर मात्रा में थी, जिसे मैं अन्यत्र स्थानान्तरित कर चुका हूँ। वार्धक्य एवं स्वास्थ्य विषयक कारणों से 20 आलमारियों में व्यवस्थित मेरे पुस्तक संग्रह तथा पुरातात्विक सामग्री को संभालना मेरे वश में नहीं रहा।

आर्यसमाज विषयक पुरातात्विक सामग्री का मेरा अपना प्रकोष्ठ– यह सामग्री अद्यापि मेरे पास है। इसमें ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज विषयक नये–पुराने अभिलेख, शोध ग्रन्थों की सिनोपसिस, पाण्डुलिपियां, नये–पुराने पत्रों में छपी सामग्री की कतरनें, मेरे स्वयं के लिखे लेख (एक हजार से कम नहीं) तथा पत्र–पत्रिकाओं में छपे मेरे शोध निबंध बीसियों फाइलों में सुरक्षित हैं। आवश्यकता तो इस बात की है कि इस सामग्री का समुचित संरक्षण हो। यथा सम्भव उपयोगी लेखों तथा कागज पत्रों का लेमिनेशन कराया जाये। इस बहुमूल्य सामग्री की विषयवार सूचियां बनें तथा इसे भावी शोधार्थियों को उपलब्ध कराया जाये। मेरे शोध पुस्तकालय का लाभ स्वदेशी विद्वानों के अतिरिक्त आस्ट्रेलिया के प्रोफेसर जार्डन्स, अमेरिका के प्रोफेसर लेवेलिन तथा जर्मनी के शोध छात्र टिने (हाइडेल बर्ग वि.वि.) आदि ले चुके हैं।

सचाई यह है कि आर्यसमाज में लेखन, पठन तथा शोध की प्रवृत्ति समाप्त हो चुकी है। हमारे नेताओं का मन जलसे, जुलूस, सम्मेलन, शोभा–यात्रा तथा नेताओं की चरण वंदना में ही लगता है। कोई ज़माना था जब हम अतिथियों को आर्ष ग्रन्थ तथा ऋषि दयानन्द प्रणीत साहित्य भेंट करते थे। अब दिल्ली के समारोहों में आगत व्यक्तियों को ऋषि के चित्र, भगवा टोपी, स्टीकर आदि भेंट किये जाते हैं। जब हम स्वयं ही नहीं पढ़ते तो, आगत व्यक्तियों को ग्रन्थ तथा साहित्य में क्यों करेंगे।

मेरे इस पुरातात्विक संग्रह में ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज विषयक जो दुर्लभ सामग्री, दस्तावेजों, लेखों की कतरनें आदि हैं, उन्हें मैंने व्यक्तिगत रुचि से संचित तथा संरक्षित किया है। निश्चित है कि यदि कोई संस्था इसका अधिग्रहण नहीं करती तो यह नष्ट हो जायेगी। सामान्य आर्यसमाजी तो पठन–पाठन से किनारा कर चुके हैं। उनके लिए तो कागजों का यह जाल रद्दी से कम नहीं है, किन्तु सम्भवतः कोई समानधर्मा ऐसा भी होगा जो इससे लाभ उठाना चाहेगा। आज आर्यसमाज विषयक थोड़ा–बहुत अध्ययन विश्वविद्यालयों से पी–एच.डी. करने वालों तक सीमित रह गया है। तथापि भवभूति के शब्दों में यह कहना उचित है–

उत्पत्स्थते मम कोऽपि समानधर्मा।
कलो ह्ययं निरवधि विपुला च पृथ्वीः।।

शायद कोई मेरे जैसी रुचि वाला समानधर्मा भविष्य में पैदा हो जाये, क्योंकि समय की अवधि नहीं है और धरती भी बहुत बड़ी है। पाठकों की प्रतिक्रियायें जानना चाहूंगा।

– 3/5 शंकर कॉलोनी, श्रीगंगानगर

वेदों में.... पृष्ठ 3 का शेष

प्रजाओं अर्थात् जीवों को उनकी योग्यता और अधिकार के अनुसार फल अर्थात् भोग्य पदार्थ प्रदान किया करता है। अर्थात् ईश्वर दयालु और न्याय कर्त्ता दोनों हैं।

वेदों में ईश्वर की दयालुता का पद–पद पर वर्णन है। देखिये–

अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिरहं धनानि सं जयामि शश्वतः।

मा हवन्ते पितरं न जन्तवोऽहं दाशुषे विभजामि भोजनम्।। (ऋग्वेद 10.48.1)

ईश्वर कहता है कि मैं सुख की सामग्री का सदा से स्वामी हूँ। सब धन मेरे वश में है। प्राणी मुझको इस प्रकार प्राप्त होते हैं जैसे पिता को पुत्र। मैं भक्तों को भोजन बाँटता हूँ।

यो अदधाज् ज्योतिषि ज्योतिरन्तर्यो असृजन् मधुना सं मधूनि।

अध प्रियं शूषमिन्द्राय मन्म ब्रह्मकृतो बृहदुक्थादवाचि।। (ऋग्वेद 10.54.6)

ईश्वर वह है जिसने प्रकाशवाले पदार्थों में अपना प्रकाश रखा। जिसने मीठी अर्थात् आनन्द देनेवाली सृष्टि की वस्तुओं को बनाया। वह ईश्वर सबका प्यारा है। ब्रह्म के प्यारे भक्त लोग ऐसे ही ईश्वर की भक्ति से प्रशंसा करते हैं।

नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।। (यजुर्वेद 16.41)।

उस ईश्वर के लिए नमस्कार हो जो – (1) **शंभव–** कल्याण करनेवाला, (2) **मयोभव–** सुखकारक, (3) **शंकर–** शान्ति देनेवाला, (4) **मयस्कर–** मोक्ष देनेवाला, (5) **शिव–** सुखस्वरूप, (6) **शिवतर–** अत्यन्त सुखस्वरूप है। जो लोग कहते हैं कि पुराने समय में लोग ईश्वर को हुआ अर्थात् डरावना समझते थे, अर्थात् वह उससे डरते थे, वह इन ऊपर के मन्त्रों पर विचार करें। ईश्वर को आनन्दस्वरूप और प्रिय–से–प्रिय बताया गया है और लीजिये–

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव। सचस्वा नः स्वस्तये।। (ऋग्वेद 1.1.9)।

वह ईश्वर उसी प्रकार हम सबको सुगमता से प्राप्त है जैसे पुत्र को पिता। वह हमारा सदा भला करता है।

हम यहाँ स्थानाभाव से अधिक मन्त्र नहीं देते। वेदों में ईश्वर के गुणों के प्रतिपादन करने के लिए अनेक मन्त्र हैं जिनसे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि आधुनिक धर्मों में ईश्वर के प्रति जो भाव प्रकट किये गये हैं, उनमें कोई ऐसा यथार्थ और उचित भाव नहीं है जो वैदिक समय में वर्त्तमान न था। एक प्रकार से यह कहना चाहिए कि संसार में मनुष्यों ने वैदिक समय के पश्चात् अपने ईश्वर सम्बन्धी विचारों में कुछ उन्नति नहीं की। हाँ, वेदों का प्रचार कम होने के कारण लोग कुछ बातें भूल अवश्य गये। और कहीं–कहीं ईश्वर को वीभत्स रूप में पूजने लगे। बाइबिल, कुरान तथा ऐसी ही अन्य धर्मपुस्तकों में ईश्वर के विषय में जो कुछ कहा गया है, वह बहुत–से अंशों में यथार्थ होने पर भी अनिश्चित और अपूर्ण है। कहीं अयथार्थ भी है। परन्तु यदि मान भी लिया जाये कि इन पुस्तकों में ईश्वर के स्वरूप का ठीक–ठीक निरूपण किया गया है, तो भी कहना पड़ेगा कि इनके लिए कोई प्रशंसा या विशेषता या नवीनता की बात नहीं है क्योंकि इनसे पूर्व यह सब भाव वेद तथा वैदिक साहित्य में वर्त्तमान थे। समास रूप से वेदों में ईश्वर का वह स्वरूप है– (1) ईश्वर एक सूक्ष्म शक्ति है जो अणु–अणु में व्यापक है। (2) यह शक्ति ज्ञानयुक्त तथा दया पूर्ण है। (3) यह शक्ति अखण्ड और एकरस है। इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। (4) यह शक्ति आनन्दस्वरूप है और इसकी प्राप्ति से ही जीव को सच्चा आनन्द प्राप्त हो सकता है।

(समाप्त)

(साभार : वैदिक–पथ जून 2010)

सगोत्र विवाह...पृष्ठ 4 का शेष

अपनेपन का भाव था। भारत जैसा विशाल एवं विश्व को चरित्र की शिक्षा देने वाला देश स्वाधीनता के लगभग 63 सालों में अपना सब कुछ लुटाकर, अपनेपन से जुड़ी हर वस्तु फेंक कर, विश्व की समस्त बुराइयों को सहर्ष स्वीकार करने वाला कूड़ेदान बनकर रह गया है। विश्व के सबसे प्राचीनतम राष्ट्र, वेदभूमि ऋषियों की तपःस्थली, श्रीराम और श्रीकृष्ण जैसे वीर–पराक्रमी योद्धाओं की कर्मस्थली, अभिमन्यु और श्रवण कुमार से लेकर भरत जैसे तेजपुंजों को जन्म देने वाले गौरवशाली देश का मात्र 63सालों में इतना पतन, इतनी दुर्दशा, इतनी ग्लानि भरा जीवन! हा दैव!! कहाँ वह अनोखा उत्कर्ष और कहाँ यह सर्वतोमुखी अधःपतन। मैथिलीशरण जी के शब्द क्या हैं, भारत की दुर्दशा पर उनकी आँखों से झरने वाले अश्रुकण हैं–

''हम कौन थे, क्या हो गये, और क्या होंगे अभी।

आओ विचारें बैठ करके, ये समस्याएँ सभी।। ''

दुर्भाग्य की पराकाष्ठा तो यह है कि आज इन समस्याओं पर विचार करने के लिए

शेष पृष्ठ 6 पर

सगोत्र विवाह.... पृष्ठ 5 का शेष

किसी के पास समय ही कहाँ है? क्या पड़ी किसी को विचार करने की? जिसका घर जलता है, वह बुझाने की दौड़–भाग करे, हम तो खड़े तमाशा देखेंगे। इस अभागे भारत के लिए क्या कहें, जहाँ घर सबके जल रहे हैं, लेकिन सबकी दृष्टि दूसरों के धधकते हुए घरों पर टिकी हुई है। अपने घर की आग पर किसी का ध्यान नहीं जा रहा। दूसरों के जलते घरों का तमाशा कुछ ऐसी सुखभरी दृष्टि से देखा जा रहा है, जैसे अपने जलते घर की आग के दुःख को दूसरों के जलते हुए घर को देखने के सुख से भुलाया जा रहा हो। ''उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्'' का उद्घोष करने वाले राष्ट्र की ये परदुःखतोष वृत्ति देखकर कौन निष्ठुर होगा, जो खून के आंसू रोने से स्वयं को रोक सकेगा?

इस सगोत्र विवाह की समस्या पर ही इतने आँसू क्यों बहाए जाएँ? समलैंगिक सम्बंधों पर न्यायालय की मुहर लग जाना क्या हमारे सांस्कृतिक जीवन मूल्यों के गाल पर तमाचा नहीं है? बिना विवाह किये वयस्क लड़के–लड़की का पति–पत्नी की तरह साथ रहने की संवैधानिक छूट क्या हमारी सामाजिक मर्यादाओं का गला घोंटने जैसा नहीं है? एक बुढ़िया का बेटा अपने युवा मित्र के साथ गृहस्थ बसाने के लिए घर में आया तो बूढ़ी मां ने कहा–'' बेटा! तेरे साथी को अपने घर की बहू मानकर आशीर्वाद दूँ या दामाद मानकर?'' ऐसे गर्हित कर्म को भी तो न्यायालय की छत्रछाया में हमारे नौनिहाल कर रहे हैं। 'लिव इन रिलेशन' और समलैंगिक सम्बन्धों की चपेट में आने वाले हमारे ही कुलदीपक हैं, हमारी ही लड़कियाँ हैं। सगोत्र विवाह की समस्या कोई छोटी नहीं है, लेकिन इससे भी बड़ी–बड़ी, विकराल दुष्परिणाम देने वाली समस्याएँ अपना फन फैलाए घूम रही हैं। इन समस्याओं का एकमात्र समाधान है, सांस्कृतिक–चेतना। सांस्कृतिक चेतना से भी पहले करने वाला अत्यावश्यक कर्म है–'सांस्कृतिक शुद्धिकरण'। हम पुराण आधारित जाति–गोत्र के प्रपंच को त्यागकर जब तक परमात्मा प्रदत्त वेद ज्ञान के विज्ञान सम्मत सिद्धान्तों को स्वीकार कर व्यावहारिक धरातल पर नहीं उतारेंगे, तब तक एक भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। अब तक हम अपने पुत्र–पुत्रियों के सामने जो सामाजिक तानाबाना प्रस्तुत करते आ रहे हैं, वह तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा नहीं उतरता। चलो सगोत्र विवाह की बात पूर्णतः विज्ञान पर आधारित है, विज्ञान के आलोक में तर्क व प्रमाणों द्वारा समझाई जा सकती है, लेकिन एक ब्राह्मण का पुत्र गुण, कर्म, स्वभाव व योग्यता आदि की समानता देखकर एक राजपूत, जाट या गूजर की लड़की से विवाह करना चाहता है, तो उसे स्वीकार न करने के लिए हमारे पास क्या तर्क हो सकते हैं? हमारी वैदिक संस्कृति में समय के साथ जो पौराणिक प्रदूषण हो गया है, उसे निकाल फेंकने में ही सब समस्याओं का समाधान और सबका कल्याण है।

एक व्यापक दृष्टिकोण से विचार करने बाद हम अपना ध्यान मूल समस्या पर केन्द्रित करते हैं। सर्वप्रथम सगोत्र और सपिंड के अर्थ समझने का प्रयार करें। मनु महाराज ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा है–

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्माणि मैथुने।।

अर्थात् जो स्त्री माता की छः पीढ़ी और पिता के गोत्र की न हो वहीं द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) में विवाह करने के लिए उत्तम है। विचारणीय बात यह है कि मनु आदि अन्य कई आचार्य सपिण्डता में छूट देकर माता की छः पीढ़ी के अन्दर भी चौथी–पाँचवीं में योग्य सुलक्षणा कन्या से विवाह की अनुमति देते दिखते हैं, लेकिन पिता के गोत्र के प्रति कोई छूट देने के पक्ष में दूर–दूर तक नहीं हैं। सगोत्र विवाह के प्रति उनकी कठोरता और मातृकुल के लिए विशेष कारणों से दी गई छूट के पीछे ठोस कारण हैं। उन कारणों की पड़ताल करने से पहले गोत्र के संबंध में तनिक विचार कर लेते हैं। गोत्र शब्द ''गैय शब्दे'' धातु से 'क्त्र' प्रत्यय पूर्वक बनता है। 'गव्यते शब्दयते इति गोत्रम्' अर्थात् गोत्र का उच्चारण करके मनुष्य अपनी वंश परंपरा के साथ संबंध को प्रकट करता है। महर्षि पाणिनि अष्टाध्यायी में लिखते हैं–'अपत्यं पौत्र प्रभृत्ति गोत्रम्।' पुत्र–पौत्रों की परम्परा को प्रकट करने वाला गोत्र कहा जाता है। गोत्र पीढ़ी दर पीढ़ी चिरकाल तक बना ही रहता है और उस गोत्र में उत्पन्न सब युवक–युवति शास्त्र की मर्यादानुसार भाई–बहिन माने जाते हैं। युवा पीढ़ी तक हमने इस वंश विज्ञान को परम्परा से हटकर विज्ञान के आलोक में नहीं पहुँचाया। हम युवा पीढ़ी के प्रति आक्रोश व्यक्त करने से पहले यह भी देख लें कि जन्म से लेकर आज तक हम अपनी पारिवारिक और सामाजिक मर्यादाओं का उन्हें कितना ज्ञान दे सके हैं।

सगोत्र विवाह का कठोरता से निषेध करने के पीछे ऋषियों का चिन्तन वंश परंपरा को निरंतर उत्कृष्ट बनाना ही रहा है। दुःख की बात तो यह है कि मध्यकाल में हमारे मतिभ्रष्ट लोगों ने बिना कोई पुरुषार्थ किए अपने जातीय बड़प्पन को बनाये रखने के लिए ऐसे उल्टे–सीधे, अवैज्ञानिक, अव्यावहारिक जाति नियम बना दिए, जिनके चलते राष्ट्र इस दुर्गति को भोग रहा है! निकट वैवाहिक सम्बन्धों का निषेध तो वैदिक काल से ही था, लेकिन इन सम्बन्धों ने 'दुहिता दूरे हिता' जैसे ऋषि वाक्य होते हुए भी दूर देश के वैवाहिक सम्बन्धों का भी पत्ता काट दिया। अमुक–अमुक में निकट विवाह नहीं, दूर देश में कहीं भी नहीं, बस हमने जो सीमा बाँध दी, किराये के टट्टू की तरह बँधे रहो, धर्मभीरु भारतवासी 'बाबा वाक्यम् प्रमाणम्' कहकर बँधे रहे। ऋषि दयानन्द ने हमारे 'सत्य वचन महाराज' जैसे बन्धन एक झटके से तोड़ डाले। उन्होंने कहा हमारा अर्जुन अमेरिका में तथा धृतराष्ट्र अफगानिस्तान से विवाह करके लाया था। ऋषि का मानना है कि दूर देश में विवाह होने से धातु की अदला–बदली से श्रेष्ठ सन्तान की प्राप्ति होती है। आज विज्ञान जीवन के हर क्षेत्र में उन्नतिशील नस्ल के लिए ऋषि प्रणीत प्रजनन विज्ञान का सहारा लेता है। गाय, घोड़े जैसे उपयोगी पशुओं के सम्बन्ध में इसका लाभ सभी लेना चाहते हैं। अपनी गाय व बछेरी को श्रेष्ठ दूरस्थ नस्ल के साँड, घोड़े से सम्पर्क कराने के लिए लोग हजारों–लाखों रुपये खर्च कर रहे हैं। किसान अपने खेत में उगे हुए अन्न को दूसरी–तीसरी बार बोने की अपेक्षा दूरस्थ कृषि फार्म के उन्नत और उत्कृष्ट बीज को कई गुणा अधिक पैसे देकर लाता है। पश्चिम के अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि एक ही वंश और क्षेत्र में उत्पन्न नर–मादा के संयोग से उत्पन्न हुए बच्चे अल्पायु होते हैं, उनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होने से रोगी व दुर्बल रहते हैं। प्रशंसा करनी चाहिए योरोप के पशु विशेषज्ञों की, कि वे वन्यजीवों को लुप्त होने से बचाने के लिए शेरों को उनके जन्मस्थान से पकड़कर दूरस्थ जंगलों में छोड़ रहे हैं, ताकि वहाँ शेरनियों से सम्पर्क बनाकर वे शेरों की उन्नत नस्ल पैदा करें। शेर एक ही वंश के परस्पर सम्बन्ध से अल्पायु व रोगी होकर नष्ट न हो जाएँ। नृवंश के लिए तो उन्होंने यह प्रयास गत शती के पूर्वार्द्ध से प्रारंभ कर दिया था। डॉ0 कॉवन, डॉ0 ट्राल, लेडी डॉ0 फौलर और अमेरिका के डॉ0 डेविस की पुस्तकें इस दिशा में व्यापक चिन्तन प्रस्तुत करती हैं। यह दूसरी बात है कि वासना के प्रबल प्रवाह में तेज गति से बहने वाला योरोप उनकी इन सद्शिक्षाओं से कितना लाभ उठा पाया है? हम भी अगर योरोप द्वारा योजनाबद्ध ढंग से चलाए जा रहे अश्लील अभियान को जागरुकता व कठोरता के साथ न रोक सके, तो शीघ्र ही हमारे हाथों से सब कुछ

शेष पृष्ठ 7 पर

आर्यसमाज की...प्रथम पृष्ठ का शेष

'पूजनीय! प्रभो हमारे....' एवं आर्यसमाज की आकर्षक धुनों को पहले अपने मोबाइल की कालर ट्यून बनाने की सुविधा केवल एयर टेल पर उपलब्ध थी। किन्तु अब यह सुविधा –वोडा, आइडिया, एयर टेल, टाटा सीडीएमए, टाटा डोकोमो, बी.एस.एन.एल. एवं एम.टी.एस. पर भी उपलब्ध हो चुकी है। रिलायंस एवं एयर सेल पर भी यह सुविधा उपलब्ध हो जायेगी। इसकी सूचना आपको यथाशीघ्र दे दी जायेगी। कालर ट्यून बनाने की प्रक्रिया इस प्रकार है–

Voda- SMS "CT code"send to 56789
Idea- SMS "DT Code"send to 55456
Airtel- Dial Code and Say " YES"
Tata cdma- SMS "Wtcode" send to 12800
Tata docomo- SMS "CT code" to 543211
BSNL- SMS "BT code" send to 56700
MTS- SMS "CT code" send to55777

Sr No.	Song Title	Movie/Album	Voda	Idea	Airtel	Tata CDMA	Tata Docomo	BSNL (North)	MTS
1	Aai Fauj Dayaanand Wali	Dev Dayanan (Dayanand Song)	10444132	720080	543211007382	WT376609	254930	173340	77772509
2	Hey Prabhu Hum Tumse	Dev Dayanand (Dayanand Song)	10444133	720084	543211007383	WT376614	254931	173341	77772510
3	Hota Hai Saare Desh Ka	Dev Dayanand(Dayanand Song)	10444134	720081	543211007384	WT376615	254932	173342	77772511
4	Humko Sab Duniya Jaane	Dev Dayanand(Dayanand Song)	10444135	720082	543211007385	WT376616	254933	173343	
5	Jo Holi So Holi	Dev Dayanand(Dayanand Song)	10444136	720090	543211007386	WT376622	254934	173344	77772512
6	Pujniya Prabhu Humaare	Dev Dayanand(Dayanand Song)	10444137	720105	543211007387	WT376629	255260	173345	77772513
7	Suno Suno Ae Duniya Waalo	Dev Dayanand(Dayanand Song)	10444138	720115	543211007388	WT376639	254935	173346	77772514
8	Yun To Kitne Hi Mahapurush	Dev Dayanand(Dayanand Song)	10444139	720111	543211007389	WT376644	254936	173347	77772515

उदाहरण के तौर पर आप Aai Fauj Dayaanand Wali गीत की धुन अपने आईडीया मोबाईल पर कॉलर ट्यून बनाना चाहते हैं, तो आप गीत के DT Code "720080" को टाईप कर इस नंबर "55456" पर एसएमएस करें। आर्यजनों से हमारा अनुरोध है कि इन धुनों को अपने मोबाईल में जरूर लगवाएं। जब भी कोई व्यक्ति आपको कॉल करेगा तो उसको ये धुनें सुनाई देंगी।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा, गोविंद धाम में वैदिक सत्संग आयोजित

आर्यसमाज जिला कोटा एवं गोविंद धाम आश्रम ट्रस्ट किशोरपुरा के संयुक्त तत्वावधान में अमावस्या वैदिक सत्संग का आयोजन किया गय। यज्ञोपरांत श्री अरविंद पाण्डेय के भजन एवं श्री वृद्धिचन्द शास्त्री का प्रवचन हुआ। सभा कोटा द्वारा 14 जून 2010 को 'अमृतम् जलम्' अभियान के तहत किशोर सागर तालाब में **श्रमदान** किया गया। इसमें अनेक आर्य परिवार के सदस्यों के साथ–साथ अनेक गणमान्य लोगों ने भाग लिया। 14 जून 2010 को ही बिनानी सभागार में **रक्तदान शिविर** का आयोजन किया गया। इसमें अनेक महानुभावों ने रक्त दान किया। सभा प्रधान श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा के विधायक ओम बिड़ला, योगेन्द्र खीचीं, जे०एस० दुबे आदि का विशेष योगदान रहा।

–अरविंद पाण्डेय, मीडिया प्रभारी

प्रेरक प्रसंग

इन्हें सोने दो

आर्यसमाज धारूर महाराष्ट्र का उत्सव था। श्री पण्डित नरेन्द्र जी हैदराबाद से पधारे। रात्रि में सब विद्वान् आर्यसमाज के प्रधान पण्डित आर्यभानु जी के विशाल आंगन में सो गये। इनमें से एक अतिथि ऐसा था, जिसे रात्रि को अधिक ठण्ड अनुभव होती थी, परन्तु संकोचवश ऊपर के लिए मोटा कपड़ा न माँगा।

प्रातःकाल सब लोग बाहर शौच के लिए चलने लगे, तो उस अतिथि का नाम लेकर एक ने दूसरे से कहा–उन्हें भी जगा लो, सब इकट्ठे चलें। इस पर पण्डित नरेन्द्रजी ने कहा– ऊँचा मत बोलो, जाग जाएँगे। जागाओ मत, सोने दो। इन्हें रात को बड़ी ठण्डी लगी। सिकुड़े पड़े थे। मैंने ऊपर शाल ओढ़ा दिया।

ये शब्द सुनकर वह सोया हुआ व्यक्ति जाग गया। वह व्यक्ति इन्हीं पंक्तियों का लेखक था। पण्डित नरेन्द्रजी रात्रि में कहाँ लघुशंका के लिए उठे। मुझे सिकुड़े हुए देखकर ऊपर शाल डाल दिया। इस प्रकार रात्रि के पिछले समय में अच्छी निद्रा आ गई, परन्तु सोये हुए यह पता न लगा कि किसने ऊपर शाल डाल दिया है।

पण्डित नरेन्द्रजी ने आर्यसमाज लातूर के उत्सव पर भी एक बार मेरे ऊपर रात्रि में उठकर कपड़ा डाला था, जिसका पता प्रातः जागने पर ही लगा। ऐसी थीं वे विभूतियाँ जिनके कारण आर्यसमाज चमका, फूला और फला। इन्हें दूसरों का कितना ध्यान था!

(साभारः राजेन्द्र 'जिज्ञासु', 'तड़पवाले तड़पाती जिनकी कहानी')

उपदेशकों की आवश्यकता

वेद प्रचार विभाग एम.डी.एच. योग्य, समर्पित एवं निष्ठावान वैदिक धर्म के प्रचार–प्रचार के लिए उपदेशकों द्वारा आवदेन पत्र आमंत्रित करता है। जो दिल्ली एवं उसके आसपास क्षेत्रों में वेद प्रचार कार्य कर सकें। गुरुकुलीय पद्धति से पढ़े अभ्यर्थियों को वरीयता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार देय होगा। इच्छुक व्यक्ति यथाशीघ्र अपना पूर्ण विवरण देते हुए आवेदन पत्र– **संयोजक, वेद प्रचार विभाग (एम.डी.एच), 9/44 कीर्ति नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, कीर्ति नगर, नई दिल्ली–15** के पते पर भेजें।

आर्य वर चाहिए

23 वर्ष, कद–5 फुट 3 इंच, रंग–गोरा, एजुकेशन– बी.एस–सी, बी.एड., तीन वर्ष का कम्प्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा, अध्ययनरत, एम.एस–सी. बायोटेक, गोत्र–देसवाल कन्या हेतु योग्य वर चाहिए। दिल्ली, हरियाणा के युवक को **प्राथमिकता** दी जाएगी।

संपर्क करें :– जसवन्त सिंह देसवाल (मो० 9868826053)।

ड्राइवर चाहिए

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001 को ड्राइवर की आवश्यकता है जो कक्षा 10वीं पास हो, लाइसेंस एवं बैज धारी हो एवं जिसे दिल्ली व उसके आसपास के रास्तों की अच्छी जानकारी हो। निःशुल्क आवास एवं भोजन के साथ उचित वेतन दिया जाएगा। इच्छुक व्यक्ति अपना आवेदन पत्र पूर्ण विवरण के साथ यथा शीघ्र उक्त पते पर भेजें।

शोक समाचार

प्रो० प्रमोद कुमार वर्मा का निधन

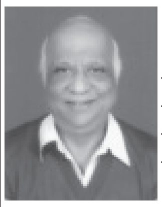

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय के दोहते एवं स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के भांजे प्रोफेसर प्रमोद कुमार वर्मा का 4 जुलाई 2010 को 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे आर्यसमाज पश्चिम विहार के अंतरंग सदस्य थे। वे दिल्ली विश्वविद्यालय में भूविज्ञान विभाग के अध्यक्ष भी रह चुके थे। वे अपने पीछे धर्मपत्नी प्रो. श्रीमती सुरेन्द्र वर्मा, सुपुत्र डॉ. अमित एवं सुपुत्री डॉ. अभिलाषा को छोड़ गए हैं। 7 जुलाई 2010 के उनकी स्मृति में आर्यसमाज पश्चिम विहार में श्रद्धांजलि सभा हुई। इसमें बीकानेर आर्यसमाज के प्रधान श्री रविन्द्र कुलश्रेष्ठ, पं. श्याम देव, श्री नाँगिया, श्री राजेन्द्र दुर्गा एवं श्री राजेन्द्र लांबा सहित अनेक आर्यजन उपस्थित थे।

डॉ. हंसराज शर्मा का निधन

दीवानचंद स्मारक गोकुलचंद आर्य अस्पताल औचंदी, दिल्ली–39 के प्रथम चिकित्सक डॉ. हंसराज शर्मा का 02 जुलाई 2010 को रात्रि 8.30 बजे निधन हो गया। वे अपने पीछे अपनी पत्नी, एक पुत्र एवं एक पुत्री छोड़ गए हैं। डॉ. शर्मा ने इस अस्पताल की लगभग 48 वर्ष तक सेवा की। वे कर्तव्यनिष्ठ थे। आर्यसमाज में उनकी अटूट आस्था थी।

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री को मातृशोक

आर्यसमाज राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60 के धर्माचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी की माता श्रीमती लौंगश्री का गत दिनों निधन हो गया। वह लगभग 55 वर्ष की थीं। वह अपने पीछे भरा–पूरा परिवार छोड़ गई हैं। वह बहुत ही उदार एवं आर्य विचारों की थीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -सम्पादक

सगोत्र विवाह.... पृष्ठ 6 का शेष

निकल जाएगा।

सगोत्र विवाह के संबंध में हम अपने ऋषियों के विचारों का अवलोकन करें तो आयुर्वेद के प्रकांड पंडित महर्षि धन्वन्तरि जी अपने प्रसिद्ध ग्रंथ सुश्रुत के चिकित्सा स्थान अध्याय 24 में 16 स्त्रियों को नितांत वर्जित मानते हुए सगोत्र विवाह का भी वर्णन करते हैं–

हीनांगीं गर्भिणीं द्वेष्यां योनिदोषसमन्विताम्।
सगोत्रां गुरुपत्नीं च तथा प्रव्रजितामपि।।

आयुर्वेद शरीर विज्ञान पर आधारित चिकित्सा शास्त्र है। महर्षि धन्वन्वतरि कोई आचारशास्त्र की बात नहीं कह रहे, बल्कि सगोत्र विवाह से होने वाले वंशानुगत शारीरिक विकारों को ध्यान में रखते हुए ही महर्षि सगोत्र संबंध का निषेध कर रहे हैं। मानव की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति के सभी पक्षों पर गहराई से विचार करने एवं सबका समुचित समन्वय स्थापित करके ही हमारा आचारशास्त्र बनाया गया है। जहाँ तक माता की सपिण्डता में विशेष अवस्था में छूट देने, लेकिन सगोत्र में न देने का प्रश्न है, तो यह भी शरीर विज्ञान पर आधारित है। वैदिक ऋषियों की मान्यता के अनुसार स्त्री को क्षेत्र तथा पुरुष को बीज माना गया है। मुसलमान लोग स्त्री को खेती कहते हैं, तो यह उनका अपना मत नहीं है, लेकिन अज्ञानता और भोगवृत्ति के कारण वे इसे हीन दृष्टि से लेते हैं कि स्त्री तो अपनी खेती है, जैसे मन में आए वैसे व्यवहार करो। वैदिक ऋषि ऐसा नहीं मानते। उनकी मान्यता 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' वाली रही है। सपिण्डता में छूट इस दृष्टि से है कि गर्भस्थ बालक के शरीर निर्माण की प्रारंभिक सामग्री में पितृवीर्य का महत्त्व बीज के समान है, मातृ भाग से मिलने वाला अंश केवल उसकी सुरक्षा का काम करता है। सपिण्डता से छूट देते हुए महर्षि मनु लिखते हैं –

उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च।
अप्राप्तं अपि तां तस्मै कन्या दद्यात् यथाविधिम्।।

अर्थात् कन्या के माता–पिता अति उत्कृष्ट शुभ गुण, कर्म, स्वभाव वाले कन्या के सदृश्य योग्य वर चाहें और वैसा अन्यत्र न मिलने पर माता की छः पीढ़ियों के अन्दर भी हो तो गुण, कर्म, स्वभाव समान होने से कन्या उसी को दें, विपरीत गुण, कर्म, स्वभाव वाले को नहीं। यह आपत् धर्म की छूट सपिण्डता अर्थात् माता की छः पीढ़ियों के संबंध में तो है, लेकिन सगोत्र विवाह के भयंकर दुष्परिणामों को देखकर वे कोई छूट देने के पक्ष में नहीं हैं। पाश्चात्य विद्वान् ट्राल वैल सगोत्र विवाह के कारण अल्पायु एवं रोगी संतान का होना मानते हैं। अमेरिका के एण्ड्रोजैक्सन का मानना है कि तलाक की बढ़ती प्रवृत्ति का मूल कारण निकट वैवाहिक संबन्ध हैं। इन सब बातों पर योग्य रीति से विचार किया जाए, तो कोई भी बुद्धिमान सगोत्र विवाह तो क्या निकट विवाह सम्बन्ध बनाने से भी बचना चाहेगा। अपनी सन्तति को अल्पायु एवं असाध्य रोगों से ग्रस्त देखने की इच्छा किस माता–पिता की होगी? सारा देश ही नहीं, आज तो विदेश भी खुला पड़ा है, उचित माध्यम से परिचय प्राप्त करके गुण, शील, स्वभाव एवं विद्या व्यवहार का मिलान करके शारीरिक अवस्था मिलाकर विवाह कर–करा लेना चाहिए। हमारे परंपरावादियों को भी दूरस्थ विवाहों के लाभ जानकर वंश की श्रेष्ठता के लिए तथाकथित जातीय संकीर्णता को त्याग देना चाहिए।

–रामनिवास 'गुणग्राहक'
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

पुरोहित का महत्व

ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में तीसरा शब्द है पुरोहितम्। इससे हमें पता चलता है कि हम अग्नि का गुणगान करें जो हम सबका पुरोहित है अर्थात् हित साधक भी है।

आचार्य यास्क निरुक्त में कहते हैं – शुभ कार्यों में हित साधक होने के कारण जिसको सर्वसाधारण प्राथमिकता देता है, वह पुरोहित है। ब्राह्मण–आरण्यक आदि वैदिक ग्रन्थों में इसका अर्थ वाणी और इन्द्रियों की पवित्रता, सूर्य की किरणों से विज्ञान के आधार पर ऊर्जा प्राप्त करना है। प्राचीन काल से ही पुरोहित का पद अत्यन्त गौरवशाली एवं सम्माननीय होता था। पुरोहित के आदेश को टालना तत्कालीन राजा–महाराजाओं के लिए भी कठिन ही नहीं, अपितु असम्भव–सा होता था, यह सब लोग जानते हैं। जब राजर्षि विश्वामित्र राक्षसों के उपद्रवों से यज्ञ को बचाने के लिए महाराज दशरथ से उनके पुत्र राम को लेने के लिए गए तो अयोध्या नरेश महाराज दशरथ ने नानुनच की। परन्तु कुलपुरोहित महर्षि वसिष्ठ ने उनसे राम एवं लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेजने को कहा। महाराज दशरथ को वसिष्ठ का कहना मानना ही पड़ा। इससे ज्ञात होता है कि वैदिक–भारतीय परम्परा में पुरोहित पद महत्वपूर्ण एवं आदर्श पद था। इतिहास में और भी उदाहरण हैं।

पुरोहित यज्ञ का ब्रह्मा होता है। यज्ञ में आए हुए सभी यजमानों एवं उपस्थित जन समूह को यज्ञों के उपरांत आशीर्वाद देता है। सबके कल्याण के लिए भगवान से प्रार्थना करता है। पुरोहित (ब्रह्मा) से झाड़ू आदि लगवाना या सेवक का कार्य करवाना उचित नहीं है। पुरोहित को नियम बनाकर नहीं बांधा जा सकता, किन्तु वह सबको श्रेष्ठ कर्मों के लिए नियम में बांध सकता है। वह धार्मिक कार्यों का ध्वजवाहक होता है, मार्गदर्शक होता है। पुरोहित गुरुवत् होता है। उसको वेतन नहीं, दक्षिणा दी जाती है और आदर–सम्मान किया जाता है।

–इन्द्र कुमार शर्मा, मोहल्ला गोबिन्दगढ़, जालन्धर

❖ साप्ताहिक आर्य सन्देश ❖

12 जुलाई से 18 जुलाई, 2010

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2009–2011
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने की दिनांक 15/16–07–2010
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2009–11
आर. एन. नं. 32387/77

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स में भजन प्रतियोगिता 17 जुलाई को

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स कमला नगर, दिल्ली–7 के तत्वावधान में आर्यसमाजों द्वारा संचालित स्कूलों के छात्र–छात्राओं के लिए 17 जुलाई 2010 को आर्य भजनावली भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। **यज्ञ–**प्रातः 8.30 से 9.30 बजे, (ब्रह्मा– आचार्य कुंवर पाल शास्त्री), **भजन प्रतियोगिता–**प्रातः 10 से 12 बजे, **पुरस्कार वितरण–**12 से 12.30 बजे। इस अवसर पर प्रतिभागियों को आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल जी आशीर्वाद प्रदान करेंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य नेता श्री धर्मपाल आर्य करेंगे। श्रीमती किरण चोपड़ा (अध्यक्षा वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब) मुख्य अतिथि होंगी। श्री सत्य नारायण गोयल विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित हैं।

–नरेन्द्र आर्य, मंत्री

वैदिक धर्म का सघन प्रचार

आर्यसमाज, ब्यावर, राजस्थान के सैद्धान्तिक भजनोपदेशक पं. अमर सिंह वाचस्पति जी ने पिछले महीनों दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, चंडीगढ़, मध्यप्रदेश, बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में आर्यसमाज के मार्गदर्शन में वैदिक सिद्धान्तों का सघन प्रचार किया। भारत के अलावा नेपाल में भी पिछले दिनों का अत्यन्त प्रभावी वेदप्रचार कार्यक्रम रहा।

– बलवन्त कुमार आर्य, मंत्री

निर्वाचन

आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली–15

प्रधान – श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा
मंत्री – श्री जितेन्द्र खरबंदा
कोषाध्यक्ष – श्री विश्वमित्र मक्कर

आर्यसमाज गोविन्दगढ़, जालन्धर

प्रधान – श्री इन्द्र कुमार शर्मा
मंत्री – श्री राजकुमार गुप्ता
कोषाध्यक्ष – श्री मुलखराज शर्मा

आर्यसमाज महर्षि दयानन्द नगर, तलवंडी सेक्टर–2, कोटा

प्रधान – श्री धर्मवीर सिंह यादवच
मंत्री – श्री मूलचन्द आर्य
कोषाध्यक्ष – श्री रघुराज सिंह करणावत

आर्यसमाज विज्ञान नगर, कोटा, (राज0)

प्रधान – श्री जे.एस. दुबे
मंत्री – श्री राकेश चड्ढा
कोषाध्यक्ष – श्री अशोक अग्निहोत्री

शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित छह सुन्दर डिजाइनों में

केवल मात्र 200/- रुपये सैकड़ा

आर्यजन अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में सहयोगी बनें। आज ही अपने आर्डर भेजें।

– सम्पर्क करें –

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–11001

प्रतिष्ठा में,
श्री.........................

अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश अब MP-3 में भी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के सम्पूर्ण समुल्लासों की MP3 डीवीडी सुमधुर एवं स्पष्ट आवाज में 35 घंटे की चलने वाली सीडी जो आपको तथा सुनने वाले समस्त लोगों को सत्यार्थप्रकाश की शिक्षाओं को समझाने में सहायक होगी। जब चाहें जो भी समुल्लास सुनें और सुनाएं **3 सीडी का सैट मात्र 60 रुपये में।** डाक से मंगाने हेतु डाकव्यय पृथक् से देय होगा। इसके साथ–साथ सम्पूर्ण सत्यार्थप्रकाश ऑडियो डीवीडी में भी उपलब्ध है। **ऑडियो डीवीडी मात्र 15/– रुपये।**

सम्पर्क करें – दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए सार्वदेशिक प्रेस, 1488 पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली–2 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड नई दिल्ली–1; फोन : 23360150; टैलीफैक्स 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य   सह सम्पादक : विनय आर्य   व्यवस्थापक : सुशील महाजन   सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर